ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 77

सहयोग शुल्क : रु. 1 / मे : 2023

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांग जनो से प्यार करें,
तथा इन्हे हमेशा सम्मान दें...
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांग जनों के प्रति प्यार उनका
सम्मान और हौसला बढ़ाता है
– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

खेल, शिक्षा और अन्य कई क्षेत्रों में दिव्यांग लोग अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर देश और दुनिया में दिव्यांगों की क्षमता और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । हमारे इस दिव्यांग सेतु में आप जिनकी प्रेरक कथा पढ़ने वाले हैं वह नवीन गुलिया एक अकस्मात के कारण कमांडो से दिव्यांग बन गये लेकिन उन्होंने किसी भी प्रकार की मर्यादा को अपने पर हावी न होने दिया और समाज और देश के लिए कुछ कर दिखाने का अपना जज्बा बनाये रखा ।

नवीन गुलिया जैसे लोग समाज में केवल दिव्यांग लोगों के लिए ही प्रेरणास्त्रोत नहीं है बल्कि पूरे देश और दुनिया को अपनी क्षमता का परिचय देकर एक नयी राह दिखा रहे हैं । नवीन गुलिया आज समाज के असहाय बच्चों के लिए कार्य कर उनकी जिन्दगी बदल ही नहीं रहे बल्कि निखार भी रहे हैं । एक साधारण जिंदगी जी रहा इन्सान अकस्मात में दिव्यांग बनने के बाद भी जरा भी हिम्मत हारे बिना देश के लिए अच्छा कार्य कर के अपना योगदान दे रहे हैं । नवीन गुलिया जैसे लोग केवल देश की सीमाओं पर ही नहीं बल्कि हमारे आसपास रहते हुए भी देश सेवा करने का अवसर नहीं गंवाते । देश और समाजने भी उनकी इस सेवा का स्मान कर अन्य लोगों को भी प्रेरित किया है ।

लोग व्यक्तिगत तौर पर समाज में दिव्यांगों के लिए कार्य कर रहे हैं तो सरकारें भी अपना कर्तव्य निभाने में पीछे नहीं हटती । दिव्यांगों के लए बनाइ जानेवाली विभिन्न योजनाएं और नीतियां एवं कानून के कारण आज कई दिव्यांगोंने समाज की मुख्य धारा में अपनी स्वीकृति दर्ज की है । सरकार की एडीप जैसी योजनाओं ने दिव्यांगों के आत्मनिर्भर होकर सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत करने में बड़ा योगदान दिया है । सरकार के ऐसे कार्यों की हमेशा प्रशंसा होनी चाहिए ।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

मे : 2023, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-6 अंक : 77

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

कमांडो से दिव्यांग बने नवीन गुलिया की कहानी, असहाय बच्चों की जिन्दगी बदल रहे हैं!

नवीन गुलिया एक साहसी व्यक्तित्व हैं । वह कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों जैसे कि हरियाणा गौरव पुरस्कार, इंडियन पीपल ऑफ द ईयर अवार्ड, ग्लोबल इंडियन ऑफ़ द ईयर, 2006 के केविनकेयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड, नेशनल रोल मॉडल अवार्ड इत्यादि के प्राप्तकर्ता हैं।

कमांडो बनकर देश की रक्षा करने का लक्ष्य लिये सेना में भर्ती हुए इस जवान की रग़ों में लहू के साथ जोश भी भरपूर दौड़ रहा था। निस्संदेह अगर यह सेना में बना रहता तो किसी बड़े पद तक पहुंच सकता था। मगर नियति को कुछ और ही मंज़ूर था।

29 मे 1995 में इस शख्स को एक ऐसी दुर्घटना का सामना करना पड़ा, जिसके बाद इसके पास बचीं तो सिर्फ सांसें। इस दुर्घटना में उसके गले और रीढ़ की हड्डी टूट गयी, नवीन

मज़बूत इरादों की जीत की मिसाल हैं, । मिलिट्री से रिटायरमेंट वाले दिन ही गिरने से उन्हें स्पाइन इंज्युरी हुई और गर्दन से नीचे का शरीर पैरेलाइज़ हो गया, डॉक्टर्स ने डिक्लेयर कर दिया हंड्रेड परसेंट डिसएबल्ड। नवीन ने खुद को डिफरेंटली एबल्ड साबित किया।

कैप्टन नवीन गुलिया ने कहा कि, 'जीवन में हर किसी का एक सपना होता है। जब भी मैं किसी से मिलता हूं पूछता हूं कि आज अपने सपने को पूरा करने के लिए आपने क्या किया। जवाब आता है कुछ नहीं...कल कुछ किया था, जवाब होता है...कुछ नहीं ।

परसों तो निश्चित ही कुछ किया होगा...जवाब फिर भी यही होता है कुछ नहीं। यदि अपने सपने को लेकर आपके जवाब भी यही हैं तो मान लीजिए कि ये आपका वो सपना नहीं है जिसके लिए आप मरने तक को तैयार हो जाएं और वह ख्वाब ही क्या जो नींद न उड़ा दे।'।

स्पाइनल इंज्यूरी के साथ गले से नीचे का उसका सारा हिस्सा पैरलाइज़्ड हो गया । दो वर्षों तक इस शख्स का इलाज चला. इसे अब भी यकीन था कि वह ठीक हो जाएगा, लेकिन १९९७ में डॉक्टरों ने उसे साफ तौर पर बता दिया कि अब वह हैंड्रेड परसेंट डिसएबल हो चुका है।

उसके शरीर के 90 प्रतिशत हिस्से ने काम करना बंद कर दिया था । वह नौजवान जिसमें जोश था, जुनून था देश के लिए कुछ कर गुज़रने का उसका सब कुछ एक ही पल में सब समाप्त हो गया । हालांकि वह अब भी ये मानने को तैयार नहीं था कि वह पूरी तरह से अपाहिज है।

चार महीने बाद ही व्हीलचेयर पर आए

एक्सीडेंट के चार महीने बाद ही वे व्हीलचेयर पर आ गए । उन्होंने किताबें पढ़ना शुरू की, खाली चेस बोर्ड पर शतरंज की प्रैक्टिस की, कम्प्यूटर कोर्स किया और फिर हैंड कंट्रोल्ड कार डिज़ाइन की, रिजेक्ट हुई तो डिफरेंटली एबल्ड के लिए हैंड कंट्रोल किट डिज़ाइन की।

2004 में दिल्ली से गाड़ी चलाते हुए दुनिया के हाइएस्ट मोटरेबल पास मारसिमिक ला तक जाने वाले वे पहले व्यक्ति थे।

लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में उनका नाम दर्ज है। 18632 फीट तक जाने के लिए उन्होंने गाड़ी में खुद ही मॉडिफिकेशन किए थे।

एक्सलरेटर, ब्रेक और क्लच सहित सभी कंट्रोल्स हाथों में रखकर उन्होंने 55 घंटो तक लगातार बगैर ब्रेक लिए ड्राइव किया था। नवीन डिफरेंटली एबल्ड ही नहीं 100 परसेंट एबल्ड के लिए भी मिसाल हैं...

उसे खुली हवा में बाहर निकलना था, कुछ बड़ा करना था। उसे लोगों की सोच बदलनी थी। उसने हिम्मत की और चार महीने बाद पूरी तरह से व्हीलचेयर पर बैठने लगा। कुछ समय में वह पहले से कुछ बेहतर हुआ तो ऐसी कार चलानी सीखी जिसमें एक्सीलेरेटर और ब्रेक हाथ से कंट्रोल होते हैं। इंसान को बदलने या अपने जीवन का लक्ष्य चुनने में कुछ मिनटों का समय ही लगता है। उस शख्स के सामने भी ऐसा ही एक दिन आया, जब उसने तय कर लिया कि उसे आगे क्या करना है। उसे एक दिन अचानक से 2 साल की एक रोती हुई बच्ची मिली, जिसे कोई लावारिस छोड़ गया था।

इसी पल उसने सोच लिया था कि वह दिव्यांग और अनाथ बच्चों की देखरेख करेगा। अपनी इस सोच को पूरा करने के लिए उसे चाहिए थे बहुत से रुपये। इन पैसों को इकट्ठा करने और अपने आपको साबित करने के लिए उसने कुछ बड़ा करने की ठानी।

इसी सोच के साथ वह 10 सितंबर 2004 को दो पत्रकारों के साथ अपनी गाड़ी में निकल पड़ा 18632 फीट ऊंचे और खतरनाक दर्रे मार्सिमिक ला की तरफ। दिल्ली से 1110 किमी की दूरी को सबसे कम समय में तय करते हुए उसे वर्ल्ड रिकार्ड बनाना था।

उसने 55 घंटों में उस दुनिया को झूठा साबित कर दिया, जहां उन जैसे लोगों को असहाय मान लिया जाता है। इसी के साथ वह ऐसा करने वाला पहला व्यक्ति बना तथा उसका नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज हो गया. उस शख्स को दुनिया नवीन गुलिया के नाम से जानती है।

एक हज़ार असफलता के लिए तैयार रहो

एक्सीडेंट के बाद मैंने जब 55 घंटों तक गाड़ी चलाई तो लोगों ने मेरी उस सफलता को पहचाना लेकिन उस एक सफलता के पहले मैं एक हज़ार बार असफल हुआ था। बच्चे अक्सर पूछते हैं कि हम कितने बार फेल हो सकते हैं। मेरा कहना है यदि आप एक हज़ार बार असफल होने के लिए तैयार नहीं हैं तो सफल होना डिज़र्व नहीं करते ।

फिलहाल, नवीन की असली पहचान है उनका एनजीओ 'अपनी दुनिया अपना आशियाना'। यही वो ज़मीन है, जिसे नवीन ज़रूरतमंद बच्चों के लिए तैयार करना चाहते थे। उन्होंने २००७ में इसकी शुरुआत हरियाणा के बहराणा गांव से की। उन्होंने इसकी शुरुआत के लिए बहराणा को इसलिए चुना।

बहराणा इसलिए, क्योंकि यहां लड़कों के मुकाबले लड़कियां बहुत कम हैं। नवीन द्वारा शुरु किये गये इस अभियान के द्वारा 1200 बच्चों को पढ़ाई से लेकर खेलकूद तक में मदद मिली है। इससे भी अहम बात ये है कि इसमें लड़कियों की संख्या लगभग 700 है।

सोचिए अगर नवीन उस दिन हार मान लेते जिस दिन उन्हें कहा गया कि वह पूरी तरह अपाहिज हो गये हैं, तो क्या इन बेसहारा बच्चों को जीने की उम्मीद मिलती? शायद नहीं! क्योंकि नवीन जैसी सोच लेकर लाखों में कोई एक पैदा होता है।

व्यवसाय

एक पूर्व-सेना अधिकारी और एडवेंचर स्पोर्ट्स में एक विश्व रिकॉर्ड धारक, नवीन गुलिया एक बहु-पुरस्कार विजेता,

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित, लेखक, एडवेंचरर, थिंकर, ओरेटर और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

वे एडवेंचर ड्राइविंग में **वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर** हैं, जो बिना रुके 55 घंटे में नई दिल्ली से दुनिया के सबसे ऊंचे माउंट पास मार्सिमिक ला, जो कि 18,632 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, तक ड्राइविंग करते हैं।

वह एक लेखक भी हैं और तीन भाषाओं में लिखते हैं। पियर्सन लॉन्गमैन द्वारा प्रकाशित उनकी अंग्रेजी पुस्तक "**इन क्वेस्ट ऑफ द लास्ट विक्ट्री**', अपनी श्रेणी में एक सर्वश्रेष्ठ बिक्री वाली पुस्तक है और प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उनकी हिंदी पुस्तक ' **वीर उसको जानिये**' सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है।

वह एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं और वंचित बच्चों के कल्याण के लिए '**अपनी दुनिया अपना आशियाना**' नामक एक संगठन चलाते हैं।

THE HINDU
METROPLUS
CHENNAI TUESDAY, OCTOBER 18, 2011

LAUNCH OF FIVE PICTURE BOOKS BY KARADI TALES. 3

The victory song

PROFILE The wheelchair has not stopped Navin Gulia from pursuing academics, mountaining through mountains or rehabilitating underprivileged kids. GEETA PADMANABHAN on his book that tells the incredible story

achiever

कैप्टन गुलिया की लर्निंग्स...

मेरे प्रशिक्षण के दिनों के दौरान मैंने जो सबसे महत्वपूर्ण चीज खोजी, समझी और आत्मसात की, वह थी "**खुद पर गर्व करना** और **खुद को उस गौरव के योग्य बनाना**। ' मैंने खुद को आत्मविश्वास से भरा और उस आत्मविश्वास से ताकत लेना सीखा।

आत्मविश्वास, जो सावधानीपूर्वक तैयारी, केंद्रित दृष्टिकोण और अनुशासित प्रयासों से आता है। मेरे द्वारा चुने गए हर क्षेत्र में इन पाठों से मुझे सफलता मिली।

- हर चीज़ पर सवाल करें
- कितना भी बुरा समय हो पॉज़िटिव बने रहें
- पैरेंट्स से कांफ्लिक्ट अच्छी बात है, जल्दी सफल होंगे
- हार से बड़ा होता है हारने का डर
- छोटे से काम में भी पूरे मन से करें
- फुटबॉल में अपोनेंट और जीवन में चैलेंज जरूरी

सभी को मेरा संदेश "आपके पास ऊर्जा और क्षमता का एक विशाल भंडार है, जिसे आपको

बस खोज करना है।" और "यदि आपको लगता है कि आप कर सकते हैं, तो पक्का इसे आप करेंगे"।

नवीन गुलिया द्वारा जीते गए विभिन्न पुरस्कारों और मान्यताओं में शामिल हैं:

- एडवेंचर स्पोर्ट्स 2004 के लिए राज्य पुरस्कार
- २००५ के थल सेना प्रमुख द्वारा स्टॉफ कमाण्डेशन अवॉर्ड
- टाइम्स ऑफ इंडिया से 'ग्लोबल इंडियन' 2005
- लिम्का बुक का 'पीपुल ऑफ द ईयर' 2005
- कैविंकर एबिलिटी 'मास्टरी अवार्ड' 2006
- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम 2007 से राष्ट्रपति का 'नेशनल रोल मॉडल' अवार्ड
- २००९ में एनजीओ के एक अंतरराष्ट्रीय संघ से कर्मवीर चक्र
- गॉडफ्रे फिलिप्स का 'माइंड ऑफ़ स्टील' 2010
- कर्मवीर पुरस्कार 2011
- सीएनएन आईबीएन 'रियल हीरोज' अवार्ड 2012
- इंदिरा क्रांतिवीर पुरस्कार 2012
- 'वीक' पत्रिका द्वारा 'भारत का मोती' पुरस्कार
- हरियाणा गौरव पुरस्कार 2004

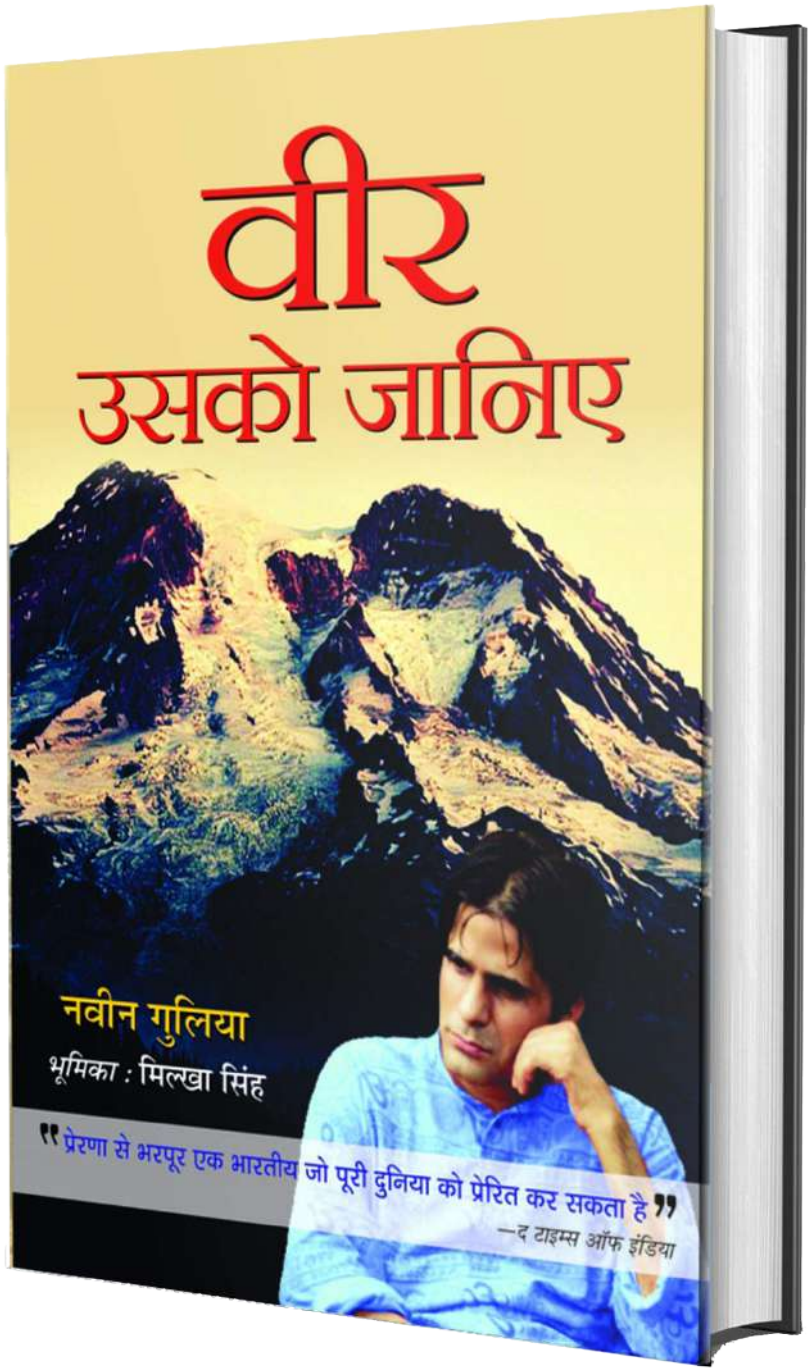

दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं

मूक बधिर और अन्य विकलांगों के लिए कई राज्य और केंद्र सरकार की योजनाएं हैं। सहायता उपकरणों की खरीद / फिटिंग के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की सहायता योजना जिसे एडिप योजना (ADIP Scheme) के नाम से जाना जाता है बहुत लोकप्रिय है । विकलांग लोन योजना, प्रधानमंत्री विकलांग योजना, विवाह सहायता योजना दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं हैं । आइए जानते हैं दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं जिनसे उन्हें फायदा होगा।

दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं कौन सी हैं?

एडिप योजना, विकलांग लोन योजना, प्रधानमंत्री विकलांग योजना, विवाह सहायता योजना, दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं हैं। इनमें से कुछ दिव्यांग योजनाएं केंद्र सरकार और कुछ राज्य सरकार की ओर से हैं । आइए इन दिव्यांग योजनाओं के बारे में विस्तार से जानते हैं।

एडिप योजना (उपकरणों की खरीद / फिटिंग के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की सहायता योजना)

एडिप योजना (ADIP Scheme) का मुख्य उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों को वैज्ञानिक रूप से निर्मित आधुनिक सहायक उपकरणों की खरीद में मदद करना है। इन सहायक उपकरणों का उपयोग विकलांगों के शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पुनर्वास को बढ़ावा देता है और उनकी विकलांगता को कम कर सकता है।

विकलांगों को स्वतंत्र बनाने और उनकी अतिरिक्त विकलांगता को रोकने के उद्देश्य से सहायता दी जाती है । योजना के तहत आपूर्ति किए जाने वाले सहायक उपकरण वारंटी के साथ अच्छी गुणवत्ता के हैं और बीआईएस (भारतीय मानक ब्यूरो) प्रमाणित हैं। एडिप योजना विकलांगों को सहायक उपकरण प्रदान करने से पहले सुधारात्मक सर्जरी (Corrective surgery) करने में भी सहायता प्रदान करती है।

एडिप योजना के अंतर्गत निम्नलिखित शर्तों को पूरा करने वाले दिव्यांगजन सहायता के लिए पात्र होंगे।

दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं के लाभार्थियों की पात्रता

एडिप योजना के अंतर्गत निम्नलिखित शर्तों को पूरा करने वाले दिव्यांगजन सहायता के लिए पात्र होंगे।

- किसी भी उम्र का भारतीय नागरिक।
- कम से कम 40% विकलांगता प्रमाण पत्र रखता हो।
- सभी स्रोतों से मासिक आय रुपये 20,001/- प्रति माह से

अधिक नहीं है।

- आश्रितों के मामले में, माता-पिता/अभिभावकों की आय 20,001/- रुपये प्रति माह से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- जिसे पिछले 3 वर्षों के दौरान किसी भी स्रोत से इसी उद्देश्य के लिए सहायता नहीं मिली है। हालांकि 12 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए यह सीमा एक साल होगी ।

दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाएं के तहत दी जाने वाली सहायता राशि कितनी है?

इस दिव्यांग योजना के तहत 10,000 रुपये की लागत वाली सहायता उपकरण शामिल हैं। नौवीं कक्षा से ऊपर विकलांग छात्रों (Students with disabilities) के मामले में, सीमा को बढ़ाकर 12,000/- रुपये कर दिया जाएगा ।

एडिप योजना के तहत, विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों को योग्य विकलांगों को सहायता और उपकरणों के वितरण के लिए अनुदान जारी किया जाता है।

एडिप योजना के तहत कार्यान्वयन एजेंसियां कौन सी हैं?

- पंजीकृत चैरिटेबल ट्रस्ट।
- जिला कलेक्टर/मुख्य कार्यकारी अधिकारी/जिला विकास अधिकारी की अध्यक्षता में भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी (Indian Red Cross) और अन्य स्वायत्त निकाय।
- योजना के तहत, विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों (आर्टिफिशियल लिम्बस मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (Alimco) / समग्र क्षेत्रीय केंद्रों / जिला विकलांगता पुनर्वास केंद्रों (District Disability Rehabilitation Centres-DDRC) / राज्य विकलांग विकास निगमों / गैर सरकारी संगठनों, आदि के लिए अनुदान सहायता जारी की जाती है ।
- सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय (Ministry of Social Justice and Empowerment) / स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (Ministry of Health and Family Welfare) के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत राष्ट्रीय संस्थान, सीआरसी (Composite Regional Centre), आरसी (Regional Centres),
- राष्ट्रीय/राज्य विकलांग विकास निगम (National/State Handicapped Development Corporation) और निजी क्षेत्र में धारा 25 कंपनियां।
- स्थानीय निकाय-जिला परिषद, नगर पालिका, जिला स्वायत्त विकास परिषद और पंचायत आदि।
- राज्य/संघ राज्य क्षेत्र/केंद्र सरकार द्वारा अनुशंसित एक अलग इकाई के रूप में पंजीकृत अस्पताल ।
- नेहरू युवा केंद्र।

एडिप योजना के तहत किस प्रकार की सहायता /

उपकरण प्रदान किए जाते हैं?

प्रत्येक प्रकार की विकलांगता के लिए निम्नलिखित सहायता और उपकरणों की अनुमति है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय का विभाग समय-समय पर सूची को अपडेट करता है।

गतिविषयक दिव्यांग के लिए सरकारी योजना (Locomotor Disable)

- सभी प्रकार के कृत्रिम और ओर्थोटिक उपकरण। (orthotic devices)
- ट्राइसाइकिल, व्हीलचेयर, बैसाखी, छड़ी और वॉकिंग फ्रेम / रोलेटर्स जैसे गतिशीलता सहायक उपकरण।
- मोटर चालित तिपहिया और व्हीलचेयर:
- विकलांग योजना के तहत, क्वाड्रिप्लेजिक (Quadriplegic), मांसपेशिय दुष्पोषण (Muscular Dystrophy), पक्षाघात (Stroke), प्रमस्तिष्क घात (Cerebral Palsy), हेमिप्लेजिया (Hemiplegia) से पीड़ित व्यक्ति और कोई अन्य व्यक्ति जिस किसी के तीन/चार अंग या शरीर का आधा हिस्सा गंभीर रूप से अक्षम है, उनके लिए ट्राइसाइकिल के लिए मोटर चालित सब्सिडी 25,000.00 रुपये है।
- यह 16 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों को 10 वर्ष में एक बार प्रदान किया जाएगा । 80% विकलांगता की आवश्यकता आवश्यक है। 16 वर्ष और उससे अधिक आयु के गंभीर रूप से विकलांग व्यक्ति जो मानसिक रूप से विकलांग हैं, वे मोटर चालित ट्राइसाइकिल और व्हीलचेयर के लिए पात्र नहीं होंगे क्योंकि इससे उन्हें गंभीर दुर्घटनाओं / शारीरिक नुकसान का खतरा होता है।
- सभी प्रकार के सर्जिकल जूते और माइक्रो सेलुलर रबर (MCR) चप्पल।
- दैनिक जीवन की गतिविधि के लिए सभी प्रकार के उपकरण।

द्रिष्टी बाधिता के लिए सरकारी योजना

- सीखने के उपकरण जैसे अंकगणितीय फ्रेम, अबेकस, ज्यामिति (Geometry) किट आदि। धीमी गति से सीखने वाले नेत्रहीन बच्चों के लिए विशालकाय ब्रेल डॉट्स सिस्टम। (Braille dots system) डिक्टाफोन और अन्य रिकॉर्डिंग सिस्टम। दसवीं कक्षा के नेत्रहीन छात्रों के लिए सीडी प्लेयर।
- विज्ञान सीखने के उपकरण जैसे बात कर रहे बैलेंस, बात कर रहे थर्मामीटर, मापने के उपकरण जैसे टेप माप, माइक्रोमीटर, आदि।
- दसवीं कक्षा के नेत्रहीन छात्रों के लिए ब्रेल लेखन उपकरण, जिसमें ब्रेलर, ब्रेल शॉर्टहैंड मशीन, टाइपराइटर शामिल हैं। बात कर रहे कैलकुलेटर, भूगोल सीखने के उपकरण जैसे उभरे हुए नक्शे और ग्लोब।
- बधिर – अंधो के लिए संचार उपकरण और टेलीफोन के लिए ब्रेल संलग्नक।
- कम दृष्टि सहायक उपकरण। जिसमें हाथ में पकड़ने वाला स्टैंड, प्रकाश के साथ और बिना प्रकाश के मैग्निफायर, स्पीच सिंथेसाइज़र और कम्प्यूटर के लिए ब्रेल अटैचमेंट।
- मांसपेशिय दुष्पोषण (Muscular Dystrophy) या प्रमस्तिष्क घात (Cerebral Palsy) वाले नेत्रहीन विकलांगों के लिए अनुकूलित वॉकर जैसे विशेष गतिशीलता सहायता।
- कंप्यूटर का उपयोग करने वाले दृष्टिबाधित व्यक्ति कुछ मामलों में रुपये 10,000/- से अधिक की लागत के सॉफ्टवेयर खरीद सकते हैं। यह सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के पूर्व अनुमोदन से किया जा सकता है। अन्य सभी उपकरणों के लिए अधिकतम सीमा रु. 10,000/- है।

श्रवण बाधिता के लिए सरकारी योजना (बधिर एवं ऊंचा सुनने वाले)

- विभिन्न प्रकार के कान की मशीन
- शैक्षिक किट जैसे सीडी प्लेयर आदि।
- टेलीफोन, टीवी, दरवाजे की घंटी, समय अलार्म आदि सुनने के लिए सहायक उपकरण।
- संचार उपकरण, जैसे, भाषण सिंथेसाइज़र आदि।

कॉक्लियर इम्प्लांट

प्रत्येक वर्ष 500 बच्चों जिन्हें कान से कम सुनाई देता है उनके लिए 6 लाख रुपये प्रति यूनिट के कॉक्लियर इम्प्लांट का प्रावधान किया जाता है। इससे 0 से 5 वर्ष के आयु वर्ग के श्रवण बाधित बच्चों को आजीवन राहत मिलेगी।

मंत्रालय ने अली यावर जंग राष्ट्रीय वाक् एवं श्रवण दिव्यांगजन संस्थान (AYJNISHD), मुंबई को कॉक्लियर इम्प्लांट के लिए केन्द्रक अभिकरण (नोडल एजेंसी) नियुक्त किया है। वे समाचार पत्रों (अखिल भारतीय संस्करण) में विज्ञापन जारी करके और अपनी वेबसाइट: adipcochlearimplant.in के माध्यम से भी आवेदन आमंत्रित करते हैं। आवेदकों को AYJNISHD, मुंबई में ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

मानसिक दिव्यांगो के लिए सरकारी योजना

पुनर्वास पेशेवर या उपचार करने वाले चिकित्सक द्वारा सलाह के अनुसार कोई भी उपयुक्त उपकरण दिया जाएगा।

दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना (डीडीआरएस योजना)

दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना (डीडीआरएस योजना) दिव्यांगों के लिए सरकारी योजनाओं मे से एक है जिसका उद्देश्य स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता देना है । डीडीआरएस दिव्यांग योजना विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास में मदद करते हैं, जिसमें प्रारंभिक हस्तक्षेप, दैनिक जीवन कौशल का विकास और प्रशिक्षण शामिल है। शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाएगा, दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना का उद्देश्य विकलांग लोगों को मुख्यधारा में शामिल करना और उनकी क्षमता को अधिकतम करना है।

दिव्यांगजन स्वावलंबन योजना

विकलांगों के लिए दिव्यांगजन स्वावलंबन योजना एक विकलांग लोन योजना है। विकलांग व्यक्तियों को आय सृजन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाली कोई भी गतिविधि शुरू करने और उनके सशक्तिकरण की समग्र प्रक्रिया में मदद करने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है।

दिव्यांगजन स्वावलंबन योजना केंद्र सरकार की विकलांग लोन योजना है। राष्ट्रीय विकलांग वित्त और विकास निगम (NHFDC) का स्वामित्व भारत सरकार के पास है। NHFDC आय सृजन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाली या विकलांगों (PwDs) की मदद करने वाली किसी भी गतिविधि को शुरू करने के लिए विकलांग रोजगार लोन सहायता प्रदान करने का कार्य करता है।

विकलांग को लोन कितना मिल सकता है?

विकलांग लोन योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए, दिव्यांग NHFDC की वेबसाइट पर लॉग ऑन कर सकते हैं।

दिव्यांगता प्रमाण पत्र (Disability Certificate) एवं यूडीआईडी कार्ड (UDID card)

कृपया ध्यान दें कि सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने वाले विकलांगों के पास वैध दिव्यांगता प्रमाण पत्र (Disability Certificate) एवं यूडीआईडी कार्ड (UDID card) होना चाहिए। यदि आपके पास दिव्यांगता प्रमाण पत्र नहीं है या इसे नवीनीकरण की आवश्यकता है, तो कृपया दिव्यांगता प्रमाणपत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया और दिशानिर्देश के बारे में पढ़ें।

सामान्य खिलाडियों के जूथ में प्रतिस्पर्धा करते हुए गोल्ड मेडल हासिल किया

राजकोट के किसान का पुत्र मीतराज बना गुजरात का पहला मनोदिव्यांग पावर लिफ्टर समाज की मुख्य धारा से जिन्हें लोग दूर समझते हैं या कई बार उनका मजाक उडाते हैं ऐसे मनोदिव्यांग लोग भी अगर उन्हें बराबरी का मौका मिले तो अपनी पूरी क्षमता से सबको चकाचौंध कर देते हैं। वैसे भी कुदरत किसी को अगर कोई एक बात में कुछ कम देती है तो दूसरा कुछ ऐसा सामर्थ्य देती है कि उन मर्यादाओं के बदले उसका वह सामर्थ्य और क्षमताएं हामारा घ्यान केन्द्रित करती है। ऐसा ही कुछ हुआ है राजकोट के किसान राजेन्द्रसिंह जाडेजा के साथ। राजेन्द्रसिंह जाडेजा का पुत्र मीतराज मनोदिव्यांग है। मीतराज १७ साल का होने पर अपने सारे काम स्वयं अच्छी तरह से कर लेता था इसलिए महिला पोलीस इन्सपेक्टर के रुप में कार्यरत राजेन्द्रसिंह की बहन चंद्रकलाबा जाडेजा ने कोच असफाख घूमरा का संपर्क कर मीतराज को पावर लीफ्टींग के खेल में सामिल किया था। मीतराज केवल मानसिक रुप से ही मर्यादाओं से घिरा था लेकिन शारीरिक रुप से अच्छे अच्छों को मात दे जाए ऐसा सक्षम था इसलिए मीतराजने केवल १ साल में ही पावर लिफ्टींग के खेल में अपनी मजबूत पकड बना ली थी। मीतराज ने १८ साल की उम्र में जिल्ला कक्षा की साधारण लोगों की पावर लिफ्टींग स्पर्धा में हिस्सा लेकर गोल्ड मेडल हासिल किया था। मीतरजा स्वयं मानसिक रुप से अक्षम है लेकिन साधारण खिलाडियों के ग्रुप में प्रतिस्पर्धा कर मेडल हासिल किया है। मीतराज ने केवल अपना या अपने परिवार का ही नहीं बल्कि पूरे राजकोट शहर का नाम रोशन किया है। मीतराज ने राष्ट्रीय स्तर के खेलों में भी प्रतिस्पर्धा कर अच्छा प्रदर्शन किया था।

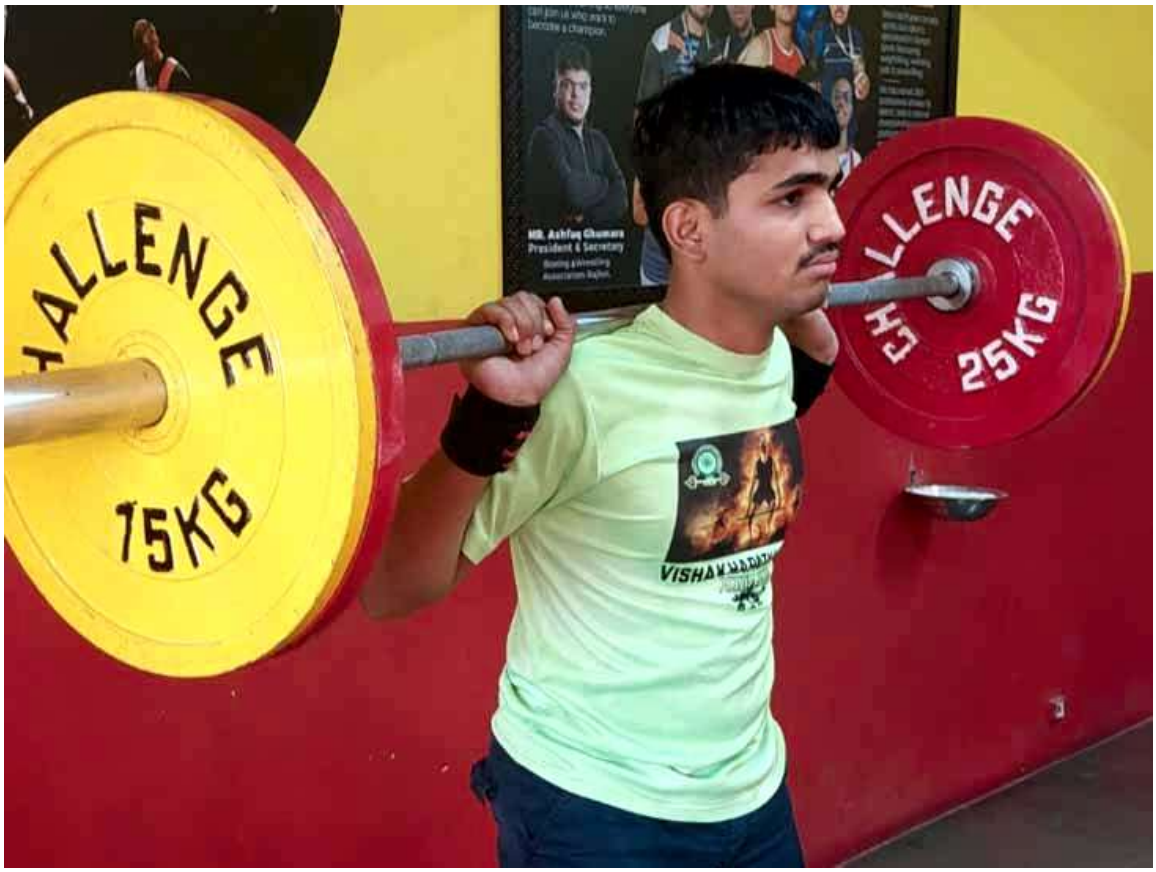

मीतराज ७४ किलो वजन ग्रुप में पावर लिफटींग की स्कवोट इवेन्ट में ११० किलोग्राम. बेंच प्रस में ६० किलोग्राम और डेडलिफ में १३० किलो कुल मिलाकर ३०० किलोग्राम वजन उठाता है। अपने इस खेल के लिए रोजाना चार घंटे प्रक्टीस करनेवाला मीतराज ५० प्रतिशत मनोदिव्यांग है।

मनोदिव्यांगजनों का फैशन शो

धर्म जागृति केन्द्र की ओर से नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल के मनोदिव्यांग छात्रों के लिए उनकी वार्षिक परिक्षा के बाद उनके मनोरंजन हेतु एक फेन्सी ड्रेस कम्पिटिशन का आयोजन किया गया था। मनोदिव्यांग छात्रों ने बोलीवुड थीम पर आधारित इस फैशन शो में पुराने फिल्मी कलाकारों के ड्रेस पहनकर और धार्मिक एवं देश नेताओं के किरदार के ड्रेस पहनकर पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया था।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में श्री प्रमोदभाई शाह और जज श्री जिगीशाबेन पटेल ने कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले सभी ८० छात्रों को टोकन पुरस्कार और श्रेष्ठ ५ बच्चों जिस मं द्रष्टि, वंशिका, तुलसी,रीधम और वृषा को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया था।

मनोदिव्यांग बच्चों ने शक्तिपीठ अंबाजी में ध्वजारोहण कर माता के दर्शन का लाभ लिया.

अहमदाबाद के अखबारनगर नवा वाडज स्थित स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट और सोपान स्पेशियल स्कूल के मनोदिव्यांग बच्चों ने जब अंबे पैदल संघ रामजी मंदिर राणीप द्वारा उंजा और मा अंबाजी के दर्शन कर ध्वजारोहण कर माता के दर्शन का लाभ लिया था। सभी बच्चों पर माता के आशीर्वाद मिले।

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे

सुमेल ५, हाउस नं.:४८/डी, बिजनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-३८० ०१६
मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर